S.T. COLLEGE of Education
AHMED RAZA NAGAR, KURKURI, PHULWARISHARIF, PATNA – 801505 (BIHAR)
Recognised by ERC, NCTE, Bhubaneswar & Affiliated to M.M.H.A. & P.U. and B.S.E.B. Patna
Email: - stcepatna@gmail.com Web: - www.stcebedcollege.com

Subject: - Contemporary India and Education.
Subject Code: - C-02
Unit: - 4th
Topic: - Ravindranath Tagore & Jiddu Krishnamurti's Philosophy

Prepared By
Assistant Professor
S.T. College of Education

S.T. College of Education

रवीन्द्र नाथ टैगोर

Ravindranath Tagore

रवीन्द्र नाथ टैगोर की जीवनी – Ravindranath Tagore Biography

प्रारम्भिक जीवन

7 मई 1861 को कोलकाता के ठाकूरबाड़ी में रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म हुआ था. इनके पिता का नाम देवेन्द्र नाथ टैगोर और माता का नाम शारदा देवी था. रवीन्द्रनाथ टैगोर अपने 13 भाई बहनों में सबसे छोटे थे. इनकी माता का निधन इनके बच्चपन में ही हो गया था.

रवीन्द्रनाथ टैगोर के बड़े भाई भी कवि और दार्शनिक थे. एक और भाई सत्येन्द्रनाथ टैगोर इंडियन सिविल सेवा में नियुक्त होने वाले पहले भारतीय थे.

रवीन्द्रनाथ टैगोर को औपचारिक शिक्षा कक्षा में बैठकर पढ़ना बिल्कुल पसंद नहीं था. जब उनका दाखिला कोलकाता के प्रेसिडेंसी कालेज में हुआ था. तब वह उस कालेज में मात्र एक दिन ही पढने के लिए गए.

टैगोर जी हमेशा अपने परिवार के सदस्यों के साथ अपनी जागीर पर घुमा करते थे. उनको महेन्द्रनाथ टैगोर जो बड़े भाई थे उन्हें पढ़ाया करते थे.

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जब उपनय संस्कार हुआ. उसके बाद वह अपने पिता के साथ देश भ्रमण पर निकल गए. उन्होंने अपने जागीर शांतिनिकेतन, अमृतसर, फिर डलहौजी चले गए. यही पर उन्होंने संस्कृत, आधुनिक विज्ञान, खगोल विज्ञान, इतिहास और कालिदास के कविताओं का अध्यन किया. उसके बाद टैगोर जी जोड़ासाँको कोलकाता लौट आए. और 1878 तक उन्होंने अपनी कई साहित्यिक रचनाएँ लिख डाली थी.

टैगोर जी के पिता उनको बैरिस्टर बनाना चाहते थे. इसलिए टैगोर जी को 1878 में बैरिस्टर की पढाई के लिए इंग्लैंड भेज दिया. इनका यूनिवर्सिटी कालेज लन्दन में दाखिला हो गया. लेकिन इन्होनें लॉ की पढाई को बीच में ही छोड़ दिया और वही पर शेक्सपियर और अन्य साहित्यकारों की रचनाओं का अध्यन करने लगे. फिर 1980 में वह बिना लॉ की पढाई किये हुए कोलकाता लौट आए.

रवीन्द्रनाथ टैगोर की शादी 1883 में मृणालिनी देवी से हो गई. शादी होने के बाद 1901 तक टैगोर जी सियाल्दा जो अब बंगला देश में हैं. यही पर वह अपनी बच्चे और पत्नी के साथ रहने लगे. उन्होंने अपने जागीर का भ्रमण किया और वही पर उन्होंने गरीब लोगों को काफी करीब से देखा. इसी समय उन्होंने ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित कई लघु कथाएं लिख दी.

1901 में रवीन्द्रनाथ टैगोर शांतिनिकेतन चले गए. वह शांतिनिकेतन में एक आश्रम स्थापित करना चाहते थे. उन्होंने यही पर एक स्कूल, पुस्तकालय और एक पूजा स्थल को बनवाया. इसी क्रम में यही पर उनकी दो बच्चों और पत्नी का निधन हो गया. 1905 में टैगोर जी के पिताजी की भी निधन हो गई थी.

14 नवम्बर 1913 को साहित्य के लिए नोवेल पुरस्कार दिया गया. यह पुरस्कार उनकी रचना 'गीतांजलि' के लिए दिया गया था. 1915 में उन्होंने नाईटहुड से सम्मानित किया गया लेकिन यह पुरस्कार उन्होंने जलियांवाला कांड के बाद लौटा दिया.

कृषि अर्थशास्त्री लियोनार्ड एमस्टर के साथ एक ग्रामीण पुननिर्माण संस्थान की स्थापना की आगे चलकर इसका संस्था का नाम बदलकर श्रीनिकेतन रखा दिया गया.

1878 से लेकर 1932 तक उन्होंने 30 देशों की यात्रा की इस यात्रा का मकसद अपनी साहित्य रचनाओं को दूसरों तक पहचाना था. वैसे तो उन्हें अधिकतर लोग कवि के रूप में जानते थे. लेकिन यह एक कवि के साथ – साथ लेख, उपन्यास लघु कहानियाँ, ड्रामा, यात्रा – वृतांत और हजारों गीत भी लिखे हैं. उन्होंने 2230 गीत लिखे हैं. यह एक अच्छे चित्रकार भी थे.

ST. College of Education

रवीन्द्रनाथ टैगोर के उनके जीवन के अंतिम 4 वर्ष बहुत कष्ट और पीड़ा में बिता. 1937 में वह अचेत की अवस्था में चले गए थे. फिर लम्बी बीमारी के बाद 7 अगस्त 1941 को उनका निधन हो गया.

रबिन्द्रनाथ टैगोर का विवाह (Rabindranath Tagore Marriage)

वर्ष 1883 रबिन्द्रनाथ टैगोर का विवाह म्रणालिनी देवी से हुआ. उस समय म्रणालिनी देवी सिर्फ 10 वर्ष की थी. रविंद्र नाथ टैगोर ने 8 वर्ष की उम्र में ही कविता लिखने का कार्य शुरू कर दिया था और 16 वर्ष की उम्र में उन्होंने भानु सिन्हा के छद्म नाम के तहत कविताओं का प्रकाशन भी शुरू कर दिया था. वर्ष 1871 में रविंद्र नाथ टैगोर के पिता ने इनका एडमिशन लंदन के कानून महाविद्यालय में करवाया. परंतु साहित्य में रुचि होने के कारण 2 वर्ष बाद ही बिना डिग्री प्राप्त किये वे वापस भारत लौट आए.

वर्ष 1877 में रविंद्रनाथ टैगोर ने एक लघु कहानी 'भिखारिणी' और कविता संग्रह, 'संध्या संघ' की रचना की. रविंद्रनाथ टैगोर ने महाकवि कालिदास की कविताओं को पढ़कर ही प्रेरणा ली थी. वर्ष 1873 में रबिन्द्रनाथ टैगोर ने अपने पिता के साथ देश के विभिन्न राज्यों का दौरा किया. इस दौरान रवीना टैगोर ने विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक और साहित्यिक ज्ञान को जमा किया. अमृतसर के प्रवास के दौरान उन्होंने सिख धर्म को बहुत ही गहराई से अध्ययन किया. और उन्होंने सिख धर्म पर कई कविताएं और लेखों को लिखा.

रबिन्द्रनाथ टैगोर की प्रमुख रचनाये (Rabindranath Tagore Literary Works):-

रविंद्रनाथ टैगोर ने कई कविताओं, उपन्यासों और लघु कथाएं लिखीं. लेकिन साहित्यिक कार्यों की अधिक संख्या पैदा करने की उनकी इच्छा केवल उनकी पत्नी और बच्चों की मौत के बाद बढ़ी.

उनके कुछ साहित्यिक कार्यों का उल्लेख नीचे दिया गया है:-

रविंद्रनाथ टैगोर ने बाल्यकाल से ही लेखन का कार्य प्रारंभ केर दिया था. रविंद्रनाथ टैगोर ने हिंदू विवाहों और कई अन्य रीति-रिवाजों के नकारात्मक पक्ष के बारे में भी लिखा जो कि देश की परंपरा का हिस्सा थे. उनकी कुछ प्रसिद्ध लघु कथाओं में कई अन्य कहानियों के बीच 'काबुलिवाला', 'क्षुदिता पश्न', 'अटोत्जू', 'हैमांति' और 'मुसलमानिर गोल्पो' शामिल हैं

ऐसा कहा जाता है कि उनके कार्यों में, उनके उपन्यासों की अधिक सराहना की जाती है. रविंद्रनाथ ने अपने साहित्यों के माध्यम से अन्य प्रासंगिक सामाजिक बुराइयों के बीच राष्ट्रवाद के आने वाले खतरों

S.T. College of Education

के बारे में बात की।

उनके अन्य प्रसिद्ध उपन्यासों में 'नौकादुबी', 'गोरा', 'चतुरंगा', 'घारे बायर' और 'जोगजोग' शामिल हैं.

रवींद्रनाथ ने कबीर और रामप्रसाद सेन जैसे प्राचीन कवियों से प्रेरणा ली और इस प्रकार उनकी कविता अक्सर शास्त्रीय कवियों के 15 वें और 16 वीं शताब्दी के कार्यों की तुलना में की जाती है. अपनी खुद की लेखन शैली को शामिल करके, उन्होंने लोगों को न केवल अपने कार्यों बल्कि प्राचीन भारतीय कवियों के कार्यों पर ध्यान देने योग्य बनाया. रबिन्द्रनाथ टैगोर ने कुल 2230 गीतों की रचना की.

रवींद्रनाथ टैगोर की प्रमुख रचनायें बालका', 'पूरबी', 'सोनार तोरी' और 'गीतांजली' शामिल हैं.

रविंद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार :-

रवींद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ टैगोर) का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण बहुत व्यापक और मानवतावादी था। उनकी शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ छात्रों को पुस्तकों से जुड़ी जानकारी देना नहीं था, बल्कि उनका उद्देश्य था छात्रों में जीवन की गहरी समझ, स्वविवेक, रचनात्मकता और मानवता का विकास करना। उनकी शिक्षा दर्शन में शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ और अनुशासन सभी का महत्वपूर्ण स्थान था।

1. शिक्षक (Teacher):

रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार, शिक्षक का मुख्य कार्य छात्रों को सिर्फ जानकारी देना नहीं, बल्कि उनके अंदर आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता को जगाना था। शिक्षक को बच्चों के साथ एक मित्र के रूप में काम करना चाहिए। वे मानते थे कि शिक्षक को बच्चे की सोच और रचनात्मकता को समझकर उसे मार्गदर्शन देना चाहिए, न कि सिर्फ अनुशासन और नियमों का पालन करना ही उद्देश्य हो। शिक्षक को बच्चों के मानसिक और भावनात्मक विकास पर ध्यान देना चाहिए, ताकि वे सिर्फ शारीरिक या मानसिक रूप से नहीं, बल्कि आत्मिक रूप से भी विकसित हो सकें।

2. विद्यार्थी (Student):

रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार, विद्यार्थी किसी यांत्रिक तरीके से ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं हैं, बल्कि वे सृजनात्मक और स्वतंत्र सोच रखने वाले प्राणी हैं। वे छात्रों को अपने भीतर की प्राकृतिक जिज्ञासा को सुलझाने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनके अनुसार, विद्यार्थी को अपनी शिक्षा और ज्ञान को जीवन के वास्तविक अनुभवों से जोड़कर समझना चाहिए, ताकि वह केवल पुस्तक ज्ञान के बजाय वास्तविक जीवन के प्रति सजग हो। टैगोर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य छात्र को अपने आत्म-संस्कार, संस्कृति और नैतिकता से जोड़ना है।

S.J. College of Education

3. पाठ्यक्रम (Curriculum):

रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा का पाठ्यक्रम पारंपरिक प्रणाली से अलग था। उनका पाठ्यक्रम न केवल अकादमिक ज्ञान पर आधारित था, बल्कि उसमें कला, संगीत, नृत्य, और जीवन की सच्चाईयों को भी समाहित किया गया था। वे मानते थे कि बच्चों को सिर्फ पुस्तकें पढ़ने के बजाय, उन्हें प्रकृति, कला और समाज से जुड़ने का अवसर मिलना चाहिए। उनके अनुसार, पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों के जीवन को समृद्ध और व्यापक बनाना था, न कि केवल उनकी बौद्धिक क्षमता को बढ़ाना।

4. शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods):

रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षण तरीका पारंपरिक तरीके से बहुत अलग था। वे मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य केवल तथ्यों को याद करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि बच्चों को सोचने, समझने और सृजनात्मकता को विकसित करने का अवसर देना चाहिए। टैगोर ने संवादात्मक और अनुभव आधारित शिक्षण विधियों को अपनाया। वे शिक्षा को एक खेल, चित्रकला, संगीत, और प्रकृति के प्रति जुड़ाव के माध्यम से सिखाने के पक्षधर थे। उनका मानना था कि जब बच्चों को शिक्षण में खुशी मिलती है, तभी वे सबसे अच्छे तरीके से सीखते हैं।

5. अनुशासन (Discipline):

रवींद्रनाथ टैगोर का अनुशासन पर दृष्टिकोण पारंपरिक और कठोर अनुशासन से अलग था। वे मानते थे कि अनुशासन का मतलब केवल दंड देना नहीं, बल्कि आत्म-नियंत्रण और आत्म-समर्पण की भावना को जागृत करना था। उनका उद्देश्य बच्चों को न केवल बाहरी अनुशासन से नियंत्रित करना था, बल्कि उन्हें अपने भीतर के अनुशासन को समझने और उसे आत्मसात करने की क्षमता देना था। टैगोर के अनुसार, सच्चा अनुशासन बच्चों के आत्म-संस्कार और उनके व्यक्तिगत विकास के साथ जुड़ा हुआ था।

निष्कर्ष:

रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन बहुत व्यापक और मानवतावादी था। उन्होंने शिक्षा को जीवन की एक प्रक्रिया के रूप में देखा, न कि केवल जानकारी देने का एक साधन। उनका उद्देश्य था कि शिक्षा बच्चों के मानसिक, शारीरिक, और भावनात्मक विकास को समग्र रूप से साकार करे। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच के संबंध को मित्रवत बनाकर, वे शिक्षा को अधिक सकारात्मक, रचनात्मक और सजीव बनाने की कोशिश करते थे। उनकी शिक्षा पद्धति आज भी प्रभावशाली और प्रासंगिक मानी जाती है।

S.T. College of Education

जिद्दू कृष्णमूर्ति

Jiddu Krishnamurti

जीवनी:

व्यक्ति की मानसिक क्रांति, मस्तिष्क की प्रवृत्ति और समाज में उसका सकारात्मक परिवर्तन कैसे लाया जाए; इन सभी विषयों पर गहन अध्ययन व चिंतन करने वाले जिधू कृष्णमूर्ति सदा इस बात पर बल देते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को मानसिक क्रांति की आवश्यकता है और उनका यह मानना था कि इस तरह की क्रांति के किन्हीं वाह्य कारक से संभव नहीं है फिर चाहे वह राजनीतिक या सामाजिक हो या धार्मिक हो। कृष्णमूर्ति पर यदि किसी चीज का गहरा प्रभाव पड़ा तो वह है 'प्रकृति'। वे चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति प्राकृतिक सौंदर्य से परिचित हो और उसे नष्ट करने से बचें। आध्यात्मिक व दार्शनिक के साथ ही वे प्रकृतिवाद के भी समर्थक रहे और शिक्षा को भी प्रकृति से संबंधित करना चाहते थे। वे कहा करते थे कि शिक्षा सिर्फ पुस्तकों से सीखना और तथ्यों को कंठस्थ करना मात्र नहीं है।

उनका मानना था कि शिक्षा का अर्थ है कि हम इस योग्य बने कि पक्षियों के चाहचाहट को सुन सकें, आकाश को देख सकें, वृक्ष तथा पहाड़ियों के साथ प्रकृति का अनुपम सौंदर्य का भली-भांति अवलोकन कर सकें। जे. कृष्णमूर्ति भारतीय शिक्षा दर्शन के एक चित परिचित व्यक्तित्व हैं जिन्होंने कई दार्शनिक व शैक्षिक विचारों से भारतीय शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन किए।

जन्म:

भारत के दक्षिण राज्य आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के मदनापल्ली नामक स्थान पर महान शिक्षाविद जे. कृष्णमूर्ति ने 11 मई 1895 को एक तेलुगु ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया। इनकी माता का नाम संजीवम्मा तथा पिता का नाम जे. नारायनीय था, इनके पिता सेवानिवृत्त कर्मचारी के साथ ही थियोसॉफिस्ट भी थे। भगवान श्री कृष्ण का वासुदेव की आठवीं संतान के रूप में जन्म लेने और जे. कृष्णमूर्ति का भी अपने माता-पिता की आठवीं संतान के रूप में जन्म लेने के कारण कृष्णमूर्ति मिला।

जीवनी:

एक ब्राह्मण परिवार के घर जन्मे कृष्णमूर्ति के अंदर आध्यात्मिक भाव के विचारों का भी जन्म हुआ। उनके पिता एक पुराने थियोसॉफिस्ट थे। जब कृष्णमूर्ति 10 वर्ष के थे तो उनकी माता जी का देहावसान हो गया। इनके पिता अपने पुत्रों समेत श्रीमती एनी बेसेंट के आमंत्रण पर 1908 में मद्रास के उड़यार

S.T. College of Education

नामक स्थान पर स्थित थियोसॉफिकल सोसायटी के परिसर में जाकर रहने लगे। बाल्यकाल से ही बालक कृष्णमूर्ति आध्यात्मिकता के धनी हो गए थे, उनकी आध्यात्मिकता को देख कर ही उस समय के प्रमुख थियोसॉफिस्ट सीडब्ल्यू लीड बीटर और श्रीमती एनी बेसेंट ने यह मान लिया था कि यह बालक एक महान आध्यात्मिक शिक्षक के रूप में विश्व का मार्गदर्शन कर सकता है।

थियोसॉफिकल सोसायटी में रहने के दौरान सी डब्ल्यू लीड बीटर ने, जो दिव्य दृष्टि वाले व्यक्ति थे उन्होंने बालक कृष्णमूर्ति में देखा कि कुछ बात तो है जो उन्हें सबसे अलग करती है। तब कृष्णमूर्ति मात्र 13 वर्ष के थे, थियोसोफिकल सोसायटी के सिद्धों ने अपने शिष्यों को निर्देश दे रखा था कि वे हर बच्चे पर अपनी दृष्टि बनाए रखें क्योंकि उन्हें पूर्वाभास हुआ था कि दुनिया में कोई महापुरुष अवतरित होगा। सभी को प्रतीत होने लगा कि कृष्णमूर्ति ही वह बालक है। इसी दौरान एनी बेसेंट ने उन्हें मुक्तिदाता के रूप में चुना और उनके लिए 'ऑर्डर ऑफ द स्टार' की स्थापना कर दी।

एनी बेसेंट चाहती थी कि कृष्णमूर्ति में वे संभावनाएं हैं जिससे बुद्ध की चेतना उन पर उतर कर कार्य करें लेकिन कृष्णमूर्ति ने होलैंड स्थित एक कैंप में दुनिया भर के लोगों के सामने यह कहकर सभी को चौंका दिया कि "सच तो एक अनजान पथ है कोई भी संस्था, कोई भी मत सच तक रहनुमाई नहीं कर सकता।"

जनवरी 1911 में उड़यार में जे. कृष्णमूर्ति की अध्यक्षता में 'ऑर्डर ऑफ द स्टार इन द ईस्ट' की स्थापना हुई। 1920 में वे पेरिस गए जहां उन्होंने फ्रेंच भाषा में दक्षता हासिल की। 3 अगस्त 1929 को श्रीमती एनी बेसेंट और 3000 से अधिक सदस्यों की उपस्थिति में कृष्णमूर्ति ने 18 वर्ष पूर्व संगठन 'ऑर्डर ऑफ द स्टेट इन द ईस्ट' को भंग कर दिया। कृष्णमूर्ति के विचारों का जन्म को उसी तरह माना जाता है जिस तरह एटम बम का आविष्कार के होने को। बुद्धिजीवियों के लिए कृष्णमूर्ति रहस्यमय व्यक्ति तो थे ही इसके साथ ही उनके कारण विश्व में जो बौद्धिक विस्फोट हुआ उसने अनेको विचारको, साहित्यकारों और राजनीतिज्ञों को अपनी जद में ले लिया। जे. कृष्णमूर्ति से धर्म और दर्शन का अंत होता है। दुनिया को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है यथार्थवादी और स्पष्ट मार्ग पर चलना।

कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार:

कृष्णमूर्ति की शिक्षा जो उनके गहरे ध्यान, सही ज्ञान और श्रेष्ठ व्यवहार की उपज है। उन्होंने विश्व के तमाम दार्शनिकों धार्मिकों और मनोवैज्ञानिकों को प्रभावित किया। कृष्णमूर्ति के विचारों के जन्म को उसी तरह मारा जाता है जिस तरह के परमाणु बम का आविष्कार को। आध्यात्मिक और बौद्धिक विचारों के साथ ही कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों को पथ प्रदर्शक माना गया, शिक्षा के प्रति उनके विचार कुछ इस प्रकार थे।

S.T. College of Education

- वर्तमान शिक्षा विभिन्न उपाधियों को प्राप्त करने के लिए ही प्रेरित करती है जिसका मुख्य उद्देश्य व्यवसाय मात्र प्राप्त करना, ऊंची सेवाओं (नौकरी) को प्राप्त करना और सत्ता हथियाने का प्रयास करना है।
- वर्तमान शिक्षा व्यक्ति के अंदर प्रतियोगिता की भावना को जन्म देती है। यह प्रतियोगिता समाज के कमजोर वर्ग का शोषण करती है और अनेक बुराइयों को जन्म देती है।
- वर्तमान शिक्षा भय पर आधारित है जीवन का हर पल भय की छाया में रहता है और भयभीत व्यक्ति में मेधा का अभाव होता है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति के दार्शनिक विचार निम्नलिखित हैं:

- **दर्शन (Philosophy):** कृष्णमूर्ति के अनुसार, सच्चा दर्शन हमारे जीवन, ज्ञान और साहचर्य के प्रति प्रेम को जगाता है। उनका मानना था कि शैक्षिक संस्थानों में दर्शनशास्त्र के रूप में जो पढ़ाया जाता है वह अक्सर विचारों और सिद्धांतों का एक संग्रह होता है जो सत्य की वास्तविक प्रकृति को प्रकट नहीं कर सकता है।

- **सत्य (Truth):** कृष्णमूर्ति ने सत्य को पथहीन भूमि के रूप में देखा, जिस तक पहुँचने के लिए कोई निश्चित मार्ग नहीं था। उनका मानना था कि सत्य भीतर छिपा है और बाहरी माध्यमों से नहीं पाया जा सकता है।

- **पीड़ा और दर्द (Suffering and Pain):** कृष्णमूर्ति शारीरिक पीड़ा, शरीर से संबंधित और मानसिक पीड़ा या दुःख के बीच अंतर करते हैं। उनका मानना था कि मानसिक पीड़ा किसी व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक स्थितियों से उत्पन्न होती है, जैसे कि अतीत और भविष्य की यादें।

- **भय (Fear):** कृष्णमूर्ति भय को मानव मन का एक गंभीर रोग मानते थे जो मानव जीवन को गहराई से प्रभावित करता है। उनका मानना था कि प्रतिस्पर्धा और अनिश्चितता भय के मूल कारण हैं और भय से मुक्ति केवल आत्मज्ञान के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।

- **मृत्यु (Death):** कृष्णमूर्ति का मानना था कि मनुष्य मृत्यु से डरते हैं और यह पूरी तरह से नहीं समझते कि जीने का क्या मतलब है। उन्होंने भौतिक मृत्यु के बीच अंतर किया, जो अपरिहार्य है और मन की मृत्यु, जो कि सच्ची मृत्यु है।

S.T. College of Education

जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन (Jiddu Krishnamurti Educational Philosophy):

- जिद्दू कृष्णमूर्ति एक दार्शनिक और वक्ता थे, जो 1895 से 1986 तक जीवित रहे। शिक्षा के क्षेत्र में उनका गहरा प्रभाव था और उनका दर्शन आज भी प्रासंगिक है।
- कृष्णमूर्ति का मानना था कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली महत्वाकांक्षा और प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करती है, जिससे समाज के कमजोर वर्गों का शोषण होता है और विभिन्न सामाजिक बुराइयों का उदय होता है।
- उनके अनुसार, वर्तमान शिक्षा प्रणाली समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय मुख्य रूप से आर्थिक लाभ, नौकरी के अवसर और शक्ति के लिए उपाधियों के अधिग्रहण को बढ़ावा देती है।
- कृष्णमूर्ति ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली के भय-आधारित दृष्टिकोण की आलोचना की। उनका मानना था कि भय बुद्धि और रचनात्मकता को बाधित करता है, और इसलिए, शिक्षा को भय और चिंता से मुक्त होना चाहिए।
- **सही शिक्षा के लिए कृष्णमूर्ति की चिंता (Krishnamurti's Concern for Right Education):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल प्राप्त करने के बारे में नहीं है, बल्कि एक पूर्ण मानव के विकास के बारे में भी है। उन्होंने शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया जिसमें जीवन के शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं को शामिल किया गया हो।
- **कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन (Krishnamurti's Education Philosophy):**

  कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन इस विश्वास पर आधारित था कि शिक्षा किसी भी प्रभाव से मुक्त होनी चाहिए, चाहे वह परंपरा, धर्म या अधिकार से हो। उनका मानना था कि सच्ची शिक्षा को व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से, आलोचनात्मक और रचनात्मक रूप से सोचने में सक्षम बनाना चाहिए।
- **आधुनिक शिक्षा पर कृष्णमूर्ति का प्रभाव (Krishnamurti's Influence on Modern Education):**

  कृष्णमूर्ति के दर्शन का आधुनिक शिक्षा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। कई शिक्षक आज शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण के महत्व और स्वतंत्र सोच और रचनात्मकता की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

S.T. College of Education

- **व्यक्तिगत अनुभव में कृष्णमूर्ति का विश्वास (Krishnamurti's Belief in Personal Experience):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि दूसरों के ज्ञान पर निर्भर रहकर हम वास्तव में सत्य को नहीं जान सकते। इसके बजाय, हमें इसे अपने स्वयं के अवलोकन और प्रतिबिंब के माध्यम से अनुभव करना चाहिए।

- **कृष्णमूर्ति की धार्मिक संप्रदायों की अस्वीकृति (Krishnamurti's Disapproval of Religious Sects):**

  कृष्णमूर्ति धार्मिक संप्रदायों और संगठनों के भी खिलाफ थे, जिनके बारे में उनका मानना था कि यह किसी व्यक्ति की स्वतंत्र और गंभीर रूप से सोचने की क्षमता को बाधित कर सकते हैं। उन्होंने किसी विशेष धार्मिक परंपरा से बंधे बिना व्यक्तियों को अपनी आध्यात्मिकता का पता लगाने की आवश्यकता पर बल दिया।

उदाहरण: कृष्णमूर्ति के दर्शन ने दुनिया भर के कई स्कूलों और शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए, अमेरिका का कृष्णमूर्ति फाउंडेशन उनके शैक्षिक दर्शन का पालन करने वाले स्कूलों और रिट्रीट केंद्रों का संचालन करता है, जो आत्म-जागरूकता, पूछताछ और अन्वेषण पर जोर देता है। इन विद्यालयों का उद्देश्य एक ऐसा वातावरण बनाना है जहाँ छात्र सीखने के प्रति प्रेम और खुद की और अपने आसपास की दुनिया की गहरी समझ विकसित कर सकें।

Philosophy and Educational Thoughts of Jiddu Krishnamurti

(जिद्दू कृष्णमूर्ति के दर्शन और शैक्षिक विचार)

जिद्दू कृष्णमूर्ति का दर्शनशास्त्र (Jiddu Krishnamurti's School Philosophy):

जिद्दू कृष्णमूर्ति, एक प्रसिद्ध दार्शनिक और वक्ता, का मानना था कि स्कूलों को एक ऐसा वातावरण प्रदान करना चाहिए जो सीखने और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा दे। उनके स्कूल दर्शन ने छात्रों के लिए एक सुरक्षित और पोषण संबंधी वातावरण बनाने के महत्व पर जोर दिया।

S.T. College of Education

- **भयमुक्त वातावरण (Fear-Free Environment):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि स्कूलों को डर से मुक्त होना चाहिए, जो एक छात्र की सीखने और बढ़ने की क्षमता में बाधा बन सकता है। शिक्षकों को एक सुरक्षित और पोषण देने वाला वातावरण बनाना चाहिए जिसमें छात्र खुद को अभिव्यक्त करने और नए विचारों की खोज करने में सहज महसूस करें।

- **छोटा छात्र-शिक्षक अनुपात (Small Student-Teacher Ratio):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि प्रभावी सीखने के लिए एक छोटा छात्र-शिक्षक अनुपात आवश्यक है। शिक्षकों को प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान देने और व्यक्तिगत मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए।

- **तुलना और प्रतिस्पर्धा से मुक्त (Free from Comparison and Competition):**

  कृष्णमूर्ति के स्कूल दर्शन ने स्कूलों को तुलना और प्रतिस्पर्धा से मुक्त होने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके बजाय, स्कूलों को एक ऐसा वातावरण प्रदान करना चाहिए जिसमें छात्र अपनी अनूठी रुचियों और क्षमताओं का पता लगा सकें।

- **सामाजिक कुरीतियों से दूर (Away from Social Evils):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि स्कूलों को गरीबी, अपराध और प्रदूषण जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर होना चाहिए। यह एक सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण बनाता है जो सीखने और व्यक्तिगत विकास का समर्थन करता है।

- **सहकारी वातावरण (Cooperative Environment):**

  कृष्णमूर्ति के स्कूल दर्शन ने सहकारी वातावरण बनाने के महत्व पर जोर दिया जिसमें छात्र एक दूसरे से सीख सकते हैं और एक साथ काम कर सकते हैं। यह टीम वर्क को बढ़ावा देता है और छात्रों को पारस्परिक कौशल विकसित करने में मदद करता है।

- **कोई विशेष विचारधारा नहीं (No Particular Ideology):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि स्कूलों को किसी विशेष विचारधारा या विश्वास प्रणाली को बढ़ावा नहीं देना चाहिए। इसके बजाय, स्कूलों को एक खुला और समावेशी वातावरण प्रदान करना चाहिए जिसमें छात्र विभिन्न विचारों और दृष्टिकोणों का पता लगा सकें।

S.T. College of Education

उदाहरण: कृष्णमूर्ति के स्कूल दर्शन ने अमेरिका के कृष्णमूर्ति फाउंडेशन सहित दुनिया भर के कई शैक्षणिक संस्थानों को प्रेरित किया है, जो छात्रों के लिए एक सुरक्षित और पोषण वातावरण प्रदान करने वाले स्कूलों और रिट्रीट केंद्रों का संचालन करता है। ये स्कूल व्यक्तिगत शिक्षा, कक्षा के छोटे आकार और सहकारी सीखने के माहौल पर जोर देते हैं। इन गुणों का पोषण करके, वे ऐसे व्यक्ति बनाने की आशा करते हैं जो आत्मविश्वासी, रचनात्मक और समाज में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम

कृष्णमूर्ति एक दार्शनिक थे जिन्होंने आत्म-ज्ञान के महत्व पर जोर दिया। हिंदी भाषा में अनूदित उनकी कुछ मुख्य रचनाएँ हैं:

- शिक्षा और संवाद **(Education and Dialogue)**
- शिक्षा और जीवन के महत्व **(Education and Meaning of Life)**
- शिक्षा केंद्रों के नाम पत्र **(Name Letters of Education Centers)**
- सीखने की कला **(The Art of Learning)**
- ध्यान **(Meditation)**
- विज्ञान और रचनात्मकता **(Science and Creativity)**
- स्कूल के नाम पत्र **(Name Cards of Schools)**
- परम्परा जो अपनी आत्मा खोने लगी **(Tradition that Lost Its Soul)**
- प्यार **(Love)**
- ध्यान में मन **(Mind in Meditation)**

S.J. College of Education

जिद्‌दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा का उद्देश्य (Jiddu Krishnamurti's Aims of Education):

प्रसिद्ध दार्शनिक और वक्ता जिद्‌दू कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल प्राप्त करने के बारे में नहीं होनी चाहिए, बल्कि स्वयं की अनुभूति और जीवन के लिए व्यक्तियों को तैयार करने के बारे में भी होनी चाहिए।

- **स्वयं का बोध (Realization of Self):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य स्वयं की अनुभूति है। शिक्षा को व्यक्तियों को उनके वास्तविक स्वरूप की खोज करने और जीवन में अर्थ और उद्देश्य खोजने में मदद करनी चाहिए।

- **जीवन के लिए तैयारी (Preparation for Life):**

  कृष्णमूर्ति ने जीवन की चुनौतियों के लिए व्यक्तियों को तैयार करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। इसमें व्यावहारिक कौशल और ज्ञान विकसित करने के साथ-साथ भावनात्मक और सामाजिक बुद्धिमत्ता भी शामिल है।

- **स्वतंत्र और निडर व्यक्ति (Free and Fearless Individuals):**

  कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन का उद्देश्य स्वतंत्र और निडर व्यक्तियों को विकसित करना था जो स्वतंत्र रूप से और गंभीर रूप से सोच सकें। उनका मानना था कि शिक्षा को व्यक्तियों को परंपरा, अधिकार और कंडीशनिंग से मुक्त होने और जीवन पर अपना अनूठा दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम बनाना चाहिए।

- **मनोवैज्ञानिक क्रांति (Psychological Revolution):**

  कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन ने एक मनोवैज्ञानिक क्रांति का आह्वान किया जिसमें व्यक्तियों को उनकी मान्यताओं, मान्यताओं और मूल्यों पर सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षा को व्यक्तियों को अपनी और दुनिया में अपनी जगह की गहरी समझ विकसित करने में मदद करनी चाहिए।

- **समाज में परिवर्तन (Change in Society):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य समाज में सकारात्मक बदलाव लाना होना चाहिए। शिक्षा को व्यक्तियों को सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने और अधिक न्यायपूर्ण और करुणाशील विश्व बनाने की दिशा में काम करने में सक्षम बनाना चाहिए।

उदाहरण: कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन ने अमेरिका के कृष्णमूर्ति फाउंडेशन सहित दुनिया भर के कई शैक्षणिक संस्थानों को प्रेरित किया है, जो स्वतंत्र और निडर व्यक्तियों को विकसित करने के उद्देश्य से स्कूलों और रिट्रीट केंद्रों का संचालन करता है। ये संस्थान एक ऐसी शिक्षा प्रदान करते हैं जो आत्म-जागरूकता, पूछताछ और अन्वेषण पर जोर देती है और छात्रों को स्वतंत्र और गंभीर रूप से सोचने के

S.T. College of Education

लिए प्रोत्साहित करती है। इन गुणों का पोषण करके, वे ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करने की आशा करते हैं जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें।

जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षण के तरीके (Jiddu Krishnamurti's Teaching Methods):

एक प्रसिद्ध दार्शनिक और वक्ता जिद्दू कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षण को ज्ञान और कौशल प्रदान करने से परे जाना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों के लिए सीखने का माहौल बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया जो पूछताछ और अन्वेषण को प्रोत्साहित करता है।

- **चर्चा पद्धति (Discussion Method):**

  कृष्णमूर्ति चर्चा पद्धति के महत्व में विश्वास करते थे, जिसमें छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षकों को एक सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण बनाना चाहिए जिसमें छात्र अपने विचारों को साझा कर सकें, प्रश्न पूछ सकें और अपने साथियों के साथ बातचीत में शामिल हो सकें।

- **प्रश्न-उत्तर विधि (Question-Answer Method):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि प्रश्न-उत्तर विधि आलोचनात्मक सोच और पूछताछ को बढ़ावा देने का एक प्रभावी तरीका है। शिक्षकों को छात्रों को प्रश्न पूछने और धारणाओं को चुनौती देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और विचारशील और अंतर्दृष्टिपूर्ण प्रतिक्रियाएं प्रदान करनी चाहिए जो छात्रों को उनके अद्वितीय दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करें।

उदाहरण: कृष्णमूर्ति की शिक्षण विधियों को अमेरिका के कृष्णमूर्ति फाउंडेशन सहित दुनिया भर के कई शैक्षणिक संस्थानों द्वारा अपनाया गया है। इन संस्थानों में, शिक्षक सक्रिय सीखने और महत्वपूर्ण सोच को प्रोत्साहित करने के लिए चर्चा और प्रश्न-उत्तर सत्र सहित विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों का उपयोग करते हैं। एक सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण बनाकर जिसमें छात्र अपने विचारों का पता लगा सकते हैं और सवाल पूछ सकते हैं, ये संस्थान जीवन भर सीखने के प्यार को बढ़ावा देने की उम्मीद करते हैं।

जिद्दू कृष्णमूर्ति की शिक्षक की भूमिका (Jiddu Krishnamurti's Role of Teacher):

एक प्रसिद्ध दार्शनिक और वक्ता जिद्दू कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षक की भूमिका एक सीखने के माहौल का निर्माण करना है जो पूछताछ और अन्वेषण को प्रोत्साहित करता है। उनका मानना था कि

ST. College of Education

शिक्षकों को अपने छात्रों को समझने और उनका निरीक्षण करने में सक्षम होना चाहिए और उनसे सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए।

- **हमेशा एक शिक्षार्थी बने रहें (Always Remain a Learner):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षक को हमेशा एक शिक्षार्थी बने रहना चाहिए, लगातार नए ज्ञान और अंतर्दृष्टि की तलाश करनी चाहिए। यह शिक्षक को नए विचारों और दृष्टिकोणों के प्रति खुला और ग्रहणशील रहने में मदद करता है और छात्रों के लिए अधिक गतिशील सीखने का माहौल बनाता है।

- **छात्रों को समझने और उनका निरीक्षण करने में सक्षम (Able to Understand and Observe Students):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षक को अपने छात्रों को समझने और उनका निरीक्षण करने में सक्षम होना चाहिए, ताकि उनके सीखने और विकास में बेहतर सहायता मिल सके। शिक्षकों को अपने छात्रों की जरूरतों और रुचियों के प्रति चौकस होना चाहिए और तदनुसार उनकी शिक्षण शैली को समायोजित करने में सक्षम होना चाहिए।

- **शिक्षक प्रशिक्षण के पक्ष में नहीं (Not in Favor of Teacher Training):**

  कृष्णमूर्ति शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि उनका मानना था कि वे शिक्षक की सीखने और बढ़ने की क्षमता को सीमित कर सकते हैं। इसके बजाय, उनका मानना था कि शिक्षकों को अपने अनुभवों और अंतर्दृष्टि के आधार पर शिक्षण के लिए अपना अनूठा दृष्टिकोण विकसित करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

उदाहरण: शिक्षक की भूमिका पर कृष्णमूर्ति के दर्शन ने अमेरिका के कृष्णमूर्ति फाउंडेशन सहित दुनिया भर के कई शिक्षकों को प्रेरित किया है। इन संस्थानों में, शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे अपने छात्रों के लिए खुले और ग्रहणशील हों और एक सीखने का माहौल तैयार करें जो पूछताछ और अन्वेषण का समर्थन करता हो। अपने छात्रों और शेष आजीवन शिक्षार्थियों में सीखने के प्यार को बढ़ावा देकर, ये शिक्षक एक अधिक जीवंत और गतिशील शिक्षण समुदाय बनाने की आशा करते हैं।

S.T. College of Education

छात्र पर जिद्दू कृष्णमूर्ति का दर्शन (Jiddu Krishnamurti's Philosophy on Student):

एक प्रसिद्ध दार्शनिक और वक्ता जिद्दू कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा बाल-केंद्रित होनी चाहिए, जिसका अर्थ है कि ध्यान व्यक्तिगत छात्र की जरूरतों और हितों पर होना चाहिए। उनका मानना था कि प्रत्येक छात्र अद्वितीय है और उसे अपनी रुचियों और जुनून का पता लगाने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए।

- **बाल-केंद्रित शिक्षा (Child-Centered Education):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा बाल-केंद्रित होनी चाहिए, जिसका अर्थ है कि ध्यान व्यक्तिगत छात्र की जरूरतों और हितों पर होना चाहिए। शिक्षकों को एक सीखने का माहौल बनाना चाहिए जो पूछताछ और अन्वेषण को प्रोत्साहित करता है और छात्रों को अपनी अनूठी रुचियों और जुनून विकसित करने की अनुमति देता है।

- **व्यक्तित्व को प्रोत्साहित करना (Encouraging Individuality):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि प्रत्येक छात्र अद्वितीय है और उन्हें अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षकों को एक सीखने का माहौल बनाना चाहिए जो व्यक्तित्व का समर्थन करता है और छात्रों को स्वतंत्र रूप से और रचनात्मक रूप से खुद को अभिव्यक्त करने की अनुमति देता है।

उदाहरण: छात्र-केंद्रित शिक्षा पर कृष्णमूर्ति के दर्शन को अमेरिका के कृष्णमूर्ति फाउंडेशन सहित दुनिया भर के कई शैक्षणिक संस्थानों द्वारा अपनाया गया है। इन संस्थानों में, शिक्षक एक सीखने का माहौल बनाने के लिए काम करते हैं जो व्यक्तित्व का समर्थन करता है और छात्रों को उनकी रुचियों और जुनून का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करता है। छात्रों को खुद के जैसा बनने और खुद को रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त करने की आजादी देकर, ये संस्थाएं सीखने के प्यार को बढ़ावा देने की उम्मीद करती हैं जो जीवन भर रहता है।

अनुशासन पर जिद्दू कृष्णमूर्ति का दर्शन (Jiddu Krishnamurti's Philosophy on Discipline):

प्रसिद्ध दार्शनिक और वक्ता जिद्दू कृष्णमूर्ति का मानना था कि अनुशासन शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा है, लेकिन यह बाहरी नियंत्रण के बजाय आत्म-अनुशासन होना चाहिए। उनका मानना था कि

S.T. College of Education

आत्म-अनुशासन स्वयं को और अपने कार्यों को समझने से आता है और यह समझ केवल भीतर से आ सकती है।

- **आत्म-अनुशासन (Self-Discipline):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि अनुशासन बाहरी ताकतों द्वारा थोपे जाने के बजाय आत्म-थोपा जाना चाहिए। उनका मानना था कि छात्रों को खुद को और अपने कार्यों को समझने और इस समझ के आधार पर आत्म-अनुशासन विकसित करने के लिए सिखाया जाना चाहिए।

- **स्वयं को समझना (Understanding Oneself):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि आत्म-अनुशासन स्वयं को और अपने कार्यों को समझने से आता है। शिक्षकों को एक सीखने का माहौल बनाना चाहिए जो आत्म-चिंतन और आत्मनिरीक्षण को प्रोत्साहित करता है, और जो छात्रों को खुद की गहरी समझ विकसित करने में मदद करता है।

उदाहरण: आत्म-अनुशासन पर कृष्णमूर्ति के दर्शन को अमेरिका के कृष्णमूर्ति फाउंडेशन सहित दुनिया भर के कई शैक्षणिक संस्थानों द्वारा अपनाया गया है। इन संस्थानों में, शिक्षक एक सीखने का माहौल बनाने के लिए काम करते हैं जो आत्म-चिंतन का समर्थन करता है और छात्रों को स्वयं की समझ के आधार पर आत्म-अनुशासन विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। अपने छात्रों में आत्म-जागरूकता और आत्म-अनुशासन की भावना को बढ़ावा देकर, ये संस्थान जिम्मेदार और विचारशील व्यक्तियों को बनाने की उम्मीद करते हैं जो समाज में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम हैं।

जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा में योगदान (Jiddu Krishnamurti's Contributions to Education):

जिद्दू कृष्णमूर्ति एक प्रसिद्ध दार्शनिक और वक्ता थे जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने के बजाय संपूर्ण व्यक्ति के विकास पर केंद्रित होनी चाहिए।

- **वर्तमान शिक्षा प्रणालियों की आलोचना (Critique of Present Education Systems):**

  कृष्णमूर्ति वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के अत्यधिक आलोचक थे। उनका मानना था कि वे संपूर्ण व्यक्ति के विकास के बजाय ज्ञान के अर्जन पर केंद्रित थे। उन्होंने शिक्षा के लिए अधिक समग्र दृष्टिकोण का आह्वान किया जो आंतरिक शांति और आनंद के विकास पर केंद्रित हो।

ST. College of Education

- **आंतरिक शांति और खुशी के लिए शिक्षा (Education for Inner Peace and Joy):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा प्रेम और सद्भाव का वातावरण होना चाहिए जो बच्चे के पूर्ण विकास को बढ़ावा दे। उनका मानना था कि सीखने की प्रक्रिया के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है और छात्रों की एक-दूसरे से तुलना करना प्रतिकूल है।

- **मानवता के लिए शिक्षा (Education for Humanity):**

  कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि मानवता के लिए होनी चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा को छात्रों को समाज के जिम्मेदार और दयालु सदस्य बनाना सिखाना चाहिए।

- **चर्चा और प्रश्नोत्तर विधि पर जोर (Emphasis on Discussion and Q&A Method):**

  कृष्णमूर्ति ने चर्चा और शिक्षण के प्रश्नोत्तर पद्धति पर जोर दिया। उनका मानना था कि इस दृष्टिकोण ने छात्रों को अपने स्वयं के विचारों और दृष्टिकोणों का पता लगाने और स्वयं और उनके आसपास की दुनिया की गहरी समझ विकसित करने की अनुमति दी।

S.T. College of Education

सत्यमेव जयते

Fundamental rights and duties

Fundamental rights

The basic rights of an individual to live life with safety and security.

Fundamental Rights are essential human rights that are offered to every citizen irrespective of caste, race, creed, place of birth, religion or gender. These are equal to freedoms and these rights are essential for ***personal good*** and the ***society*** at large.

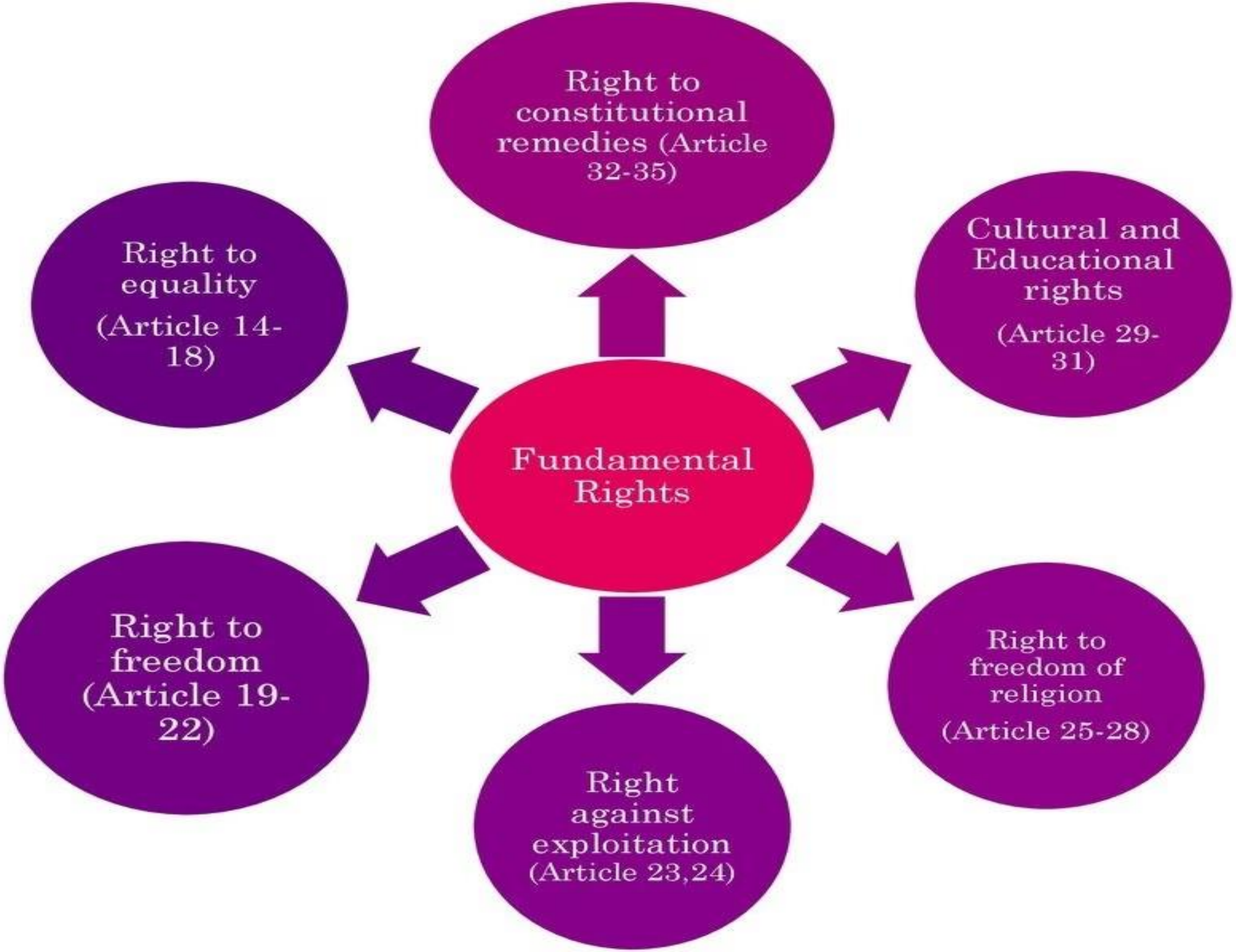
Right to constitutional remedies (Article 32-35)
Right to equality (Article 14-18)
Cultural and Educational rights (Article 29-31)
Fundamental Rights
Right to freedom (Article 19-22)
Right to freedom of religion (Article 25-28)
Right against exploitation (Article 23,24)

NATURE

- Enshrined in the part III of the constitution and safeguarded by the State
- Fundamental rights are equal for all.
- Rights are justiciable – Article 32
- Fundamental rights are not absolute.
- They limit the authority of the central and state governments.
- They can be suspended during emergency.
- Parliament can amend Fundamental rights

Fundamental rights

- Right to Equality
- Right to Freedom
- Right against Exploitation
- Right to Freedom of Religion
- Cultural and Educational Rights
- Right to Constitutional Remedies

RIGHT TO EQUALITY

Article 14 to 18

Right to Equality:

- Article 14 :- Equality before law and equal protection of law
- Article 15(3) :- Prohibition of discrimination on grounds only of religion, race, caste, sex or place of birth.
- Article 16 :- Equality of opportunity in matters of public employment
- Article 17 :-Abolition of Untouchability
- Article 18 :- Abolition of titles, Military and academic distinctions are, however, exempt

Equality before law and equal protection of laws (Article 14)

Equality Before Law:

- It ensures that every citizen shall be likewise protected by the laws of the country.
- The State will not distinguish any of the Indian citizens on the basis of their gender, caste, creed, religion or even the place of birth.
- "equality before the law" implies that all are equal in the eyes of law and all will be tried by the same law and will be given the same punishment for same crime.

Social Equality and Equal Access to Public Areas

(1) The State shall not discriminate against any citizen on grounds only of religion, race, caste, sex, place of birth or any of them.

(2) No citizen shall, on grounds only of religion, race, caste, sex, place of birth or any of them, be subject to any disability, liability, restriction or condition with regard to—

- (*a*) access to shops, public restaurants, hotels and places of public entertainment; or
- (*b*) the use of wells, tanks, bathing ghats, roads and places of public resort maintained wholly or partly out of State funds or dedicated to the use of the general public.

3. Nothing in this article shall prevent the State from making any special provision for women and children.

4. The State can make special provision for the advancement of any socially and educationally backward classes of citizens or for the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes.

5. The State can make any special provision, by law, for the advancement of any socially and educationally backward classes in so far as such special provisions relate to their admission to educational institutions including private educational institutions.

Equality in Matters of Public Employment

- There shall be equality of opportunity for all citizens in matters relating to employment or appointment to any office under the state.

These are some exceptions to prohibition of discrimination under Art. 16.(I)

- The state may reserve some appointments for backward classes
- Offices in the religious institutions may be kept reserved for the followers of the religion concerned.
- Posts in the state services may be kept reserved for the scheduled castes and tribes.
- Finally Art. 16 forbid discrimination in matters of state employment only on the grounds stated in the article itself.

Right to Freedom

Article 19 to 22

Right to Freedom:

- **Article 19 :- It guarantees the citizens of India the following six fundamentals freedoms:-**
  - **Freedom of Speech and Expression**
  - **Freedom of Assembly**
  - **Freedom of form Associations and Unions**
  - **Freedom of Movement within Indian territory.**
  - **Freedom of Residence and Settlement**
  - **Freedom of Profession, Occupation, Trade and Business**

Right to Freedom:

- Article 20 :- Protection in respect of conviction for offences
- Article 21 :- Protection of life and personal liberty
- Article 22 :- Protection against arrest and detention in certain cases

RIGHT AGAINST EXPLOITATION

Article 23 - 24

Right Against Exploitation

- **Article 23 :-** Prohibition of Human trafficking and forced labour
- **Article 24 :-** Prohibition of employment of Children below the age of 14.

RIGHT TO FREEDOM OF RELIGION

Article 25 - 28

Right to Freedom of Religion

- **Article 25 :-** Freedom to profess, practice and propagation of any religion
- **Article 26 :-** Freedom to manage religious affairs
- **Article 27 :-** Prohibits taxes on religious grounds
- **Article 28 :-** Freedom as to attendance at religious ceremonies in certain educational institutions

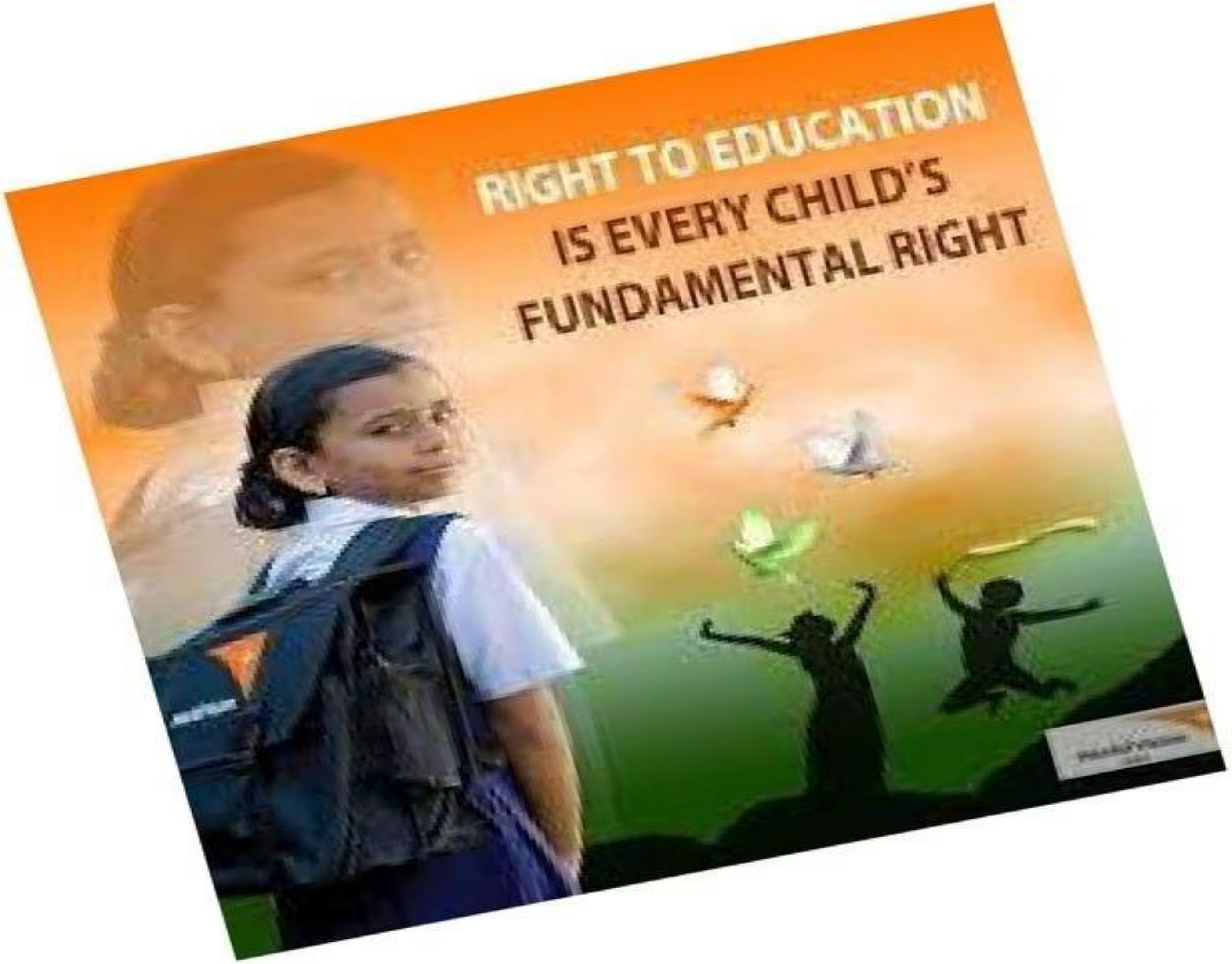

CULTURAL & EDUCATIONAL RIGHTS

Article 29 - 30

Cultural and Educational Rights

- Article 29(I) :- Protection of interests of minorities
- Article-29(2):- Freedom to get admission in educational institutions,
- Article 30(I) :- Right of minorities to establish and administer educational institutions
- Article-30(2):- No discrimination while giving grants to educational institutions
- Article 31 :- Omitted by the 44th Amendment Act

RIGHT TO CONSTITUTIONAL REMIDIES

Article 32

Right to Constitutional Remedies

- Article 32 :- The right to move the Supreme Court in case of their violation

This right empowers the citizens to move a court of law in case of any denial of the fundamental rights.

Critical evaluation of human rights

- No rights outside the constitution
- Too many limitations
- Preventive Detention and Fundamental rights
- Rights can be suspended during emergency
- Absence of Economic rights
- Vague and complex language
- Supremacy of Parliament over Fundamental Rights
- Special concessions for minorities and backward classes are against the Principle of Equality.

FUNDAMENTAL DUTIES
(ARTICLE 51A)

- Added to the Constitution by the 42nd Amendment in 1976, upon the recommendations of the Swaran Singh Committee.
- These duties set in part IV-A of the Constitution of India.
- They are not legally enforceable. They are held by the Supreme Court to be obligatory for all citizens.
- Originally ten in number, the Fundamental Duties were increased to eleven by the 86th Amendment in 2002.

Fundamental Duties

- To value and preserve the rich heritage of our composite culture.
- To protect and improve the natural environment i.e. forests, lakes, rivers and wild life & to have compassion for living creatures.
- To develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform.
- To safeguard public property and to abjure violence.
- To strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavor and achievement.
- Who is a parent or guardian to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

THANK YOU

IDEALISM AND EDUCATION

AnyScanner

Philosophy

- Search for knowledge
- Love for Wisdom
- Mother of All Sciences

AnyScanner

Philosophy

Definitions : -

" Philosophy is concerned with everything as a universal science" – Herbert Spencer

" Philosophy is essentially a spirit or method of approaching experience rather than a body of conclusions and results" – Edgar S Brightman

AnyScanner

Three Major Branches of Philosophy

- Metaphysics - the nature of reality
- Axiology - the nature of values
- Epistemology - the nature of knowledge

AnyScanner

Schools of Philosophy

- IDEALISM
- PRAGMATISM
- NATURALISM
- REALISM
- EXISTENTIALISM
- HUMANISM

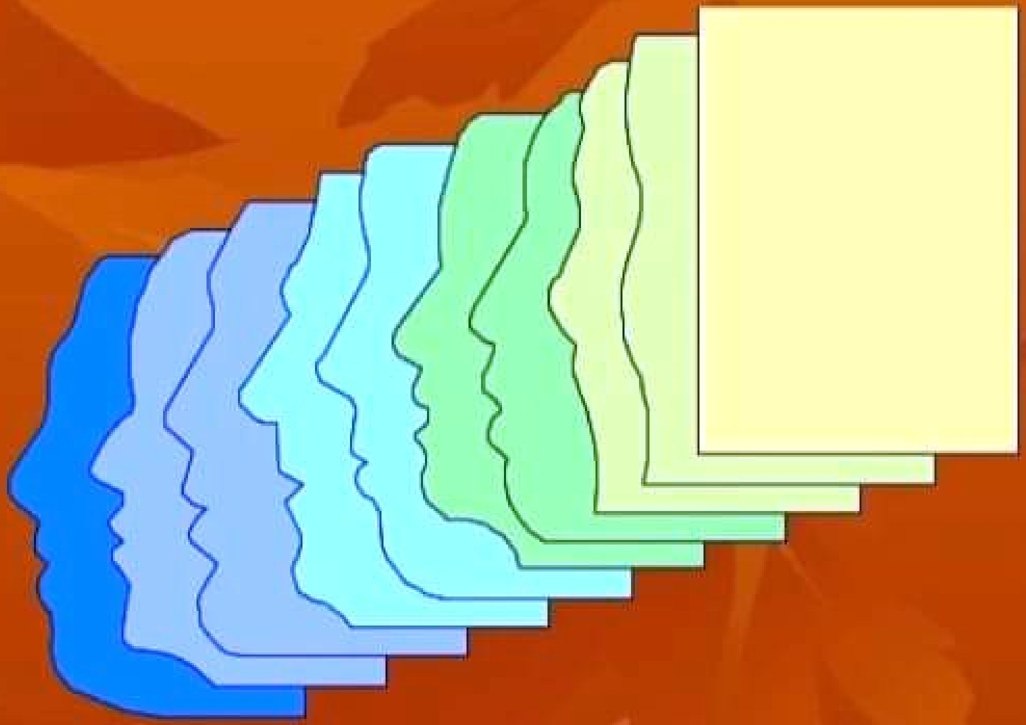

AnyScanner

Idealism

Oldest Philosophy

AnyScanner

Idealism (Idea-ism)

- Idealist believe that
  ideas are the only true reality.

- The material world is characterized by change, instability, and uncertainty; some ideas are enduring

AnyScanner

Idealism

- We should be concerned primarily with the search for truth. Since truth is perfect and eternal, it cannot be found in the world of matter that is both imperfect and constantly changing.

AnyScanner

Chief Exponents of Idealism (Western)

Socrates (469-399 BC)

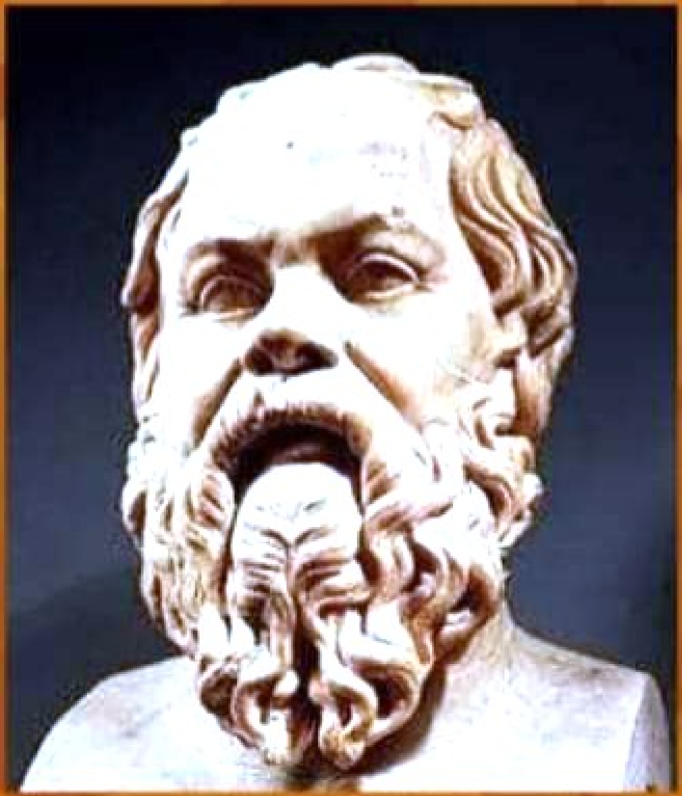

AnyScanner

Chief Exponents of Idealism (Western)

Plato (427-347 BC)

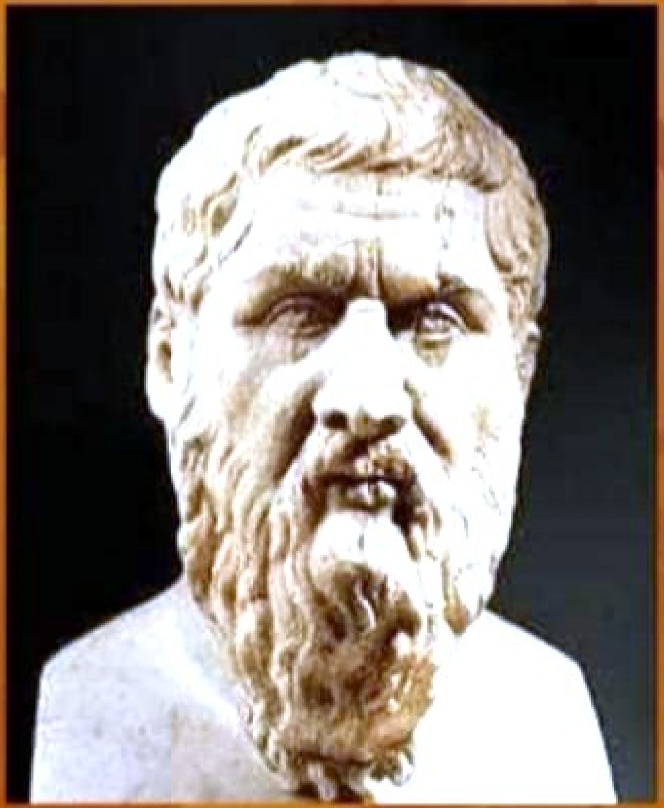

AnyScanner

Chief Exponents of Idealism (Western)

Descartes (1596-1650)

AnyScanner

Chief Exponents of Idealism (Western)

Froebel (1772-1852)

AnyScanner

Chief Exponents of Idealism (Indian)

Vedic Rhishis (1500-600 BC)

AnyScanner

Chief Exponents of Idealism (Indian)

Swami Dayananda Saraswathi (1825-1883)

AnyScanner

Chief Exponents of Idealism (Indian)

Rabindranath Tagore (1861-1941)

AnyScanner

Chief Exponents of Idealism (Indian)

Aurobindo Ghosh (1872-1950)

AnyScanner

Upanishad Idealism

Asato ma sad gamaya

Tamaso ma jyotir gamaya

Mrityor ma amritam gamaya

Lead me from unreal to real….

Lead me from darkness to light….

Lead me from death to immortality….

-Bruhadaranyuk upanishad

AnyScanner

Fundamental principles of Idealism

- Spirit and mind constitute reality.
- Man being spiritual is asupreme creation.
- God is the source of all knowledge.
- Values are absolute and unchanging.
- What is ultimately real is not the object itself but the idea behind it.
- Man is not the creator of values

SCAN AnyScanner

Metaphysics of Idealism

- The self is the primary reality of individual experience
- Ultimate reality is self
- Ultimate reality maybe one or many
- The individual self has all the freedom

AnyScanner

Axiology of Idealism

- Values are real existents.
- Evil is not real existent.
- The values of human life are what they are largely because there are individual persons to possess and enjoy them
- The individual person can realise value by actively relating parts and wholes

AnyScanner

Epistemology of Idealism

- The ultimate knowledge is the knowledge on spirituality
- Idealism and critical realism are like in their treatment of perception to some extent
- Some idealists support direct experience of the self
- Surrounding world is important to experience the self
- Reality to be a logically unified total system, a Universal mind

AnyScanner

Educational Aims of Idealism

- Develop the mind
- Search for true ideas
- Character development
- Self-realization
- Preservation and transmission of culture
- Preparation for whole life

AnyScanner

Curriculum

- Curriculum developed according to Ideals and eternal values
- Humanistic subjects

- Religious studies
- Spiritual studies
- Literature
- History
- Fine arts

AnyScanner

Discipline

- Emphasis inner discipline
- Moral and Religious instruction
- Restraint on freedom

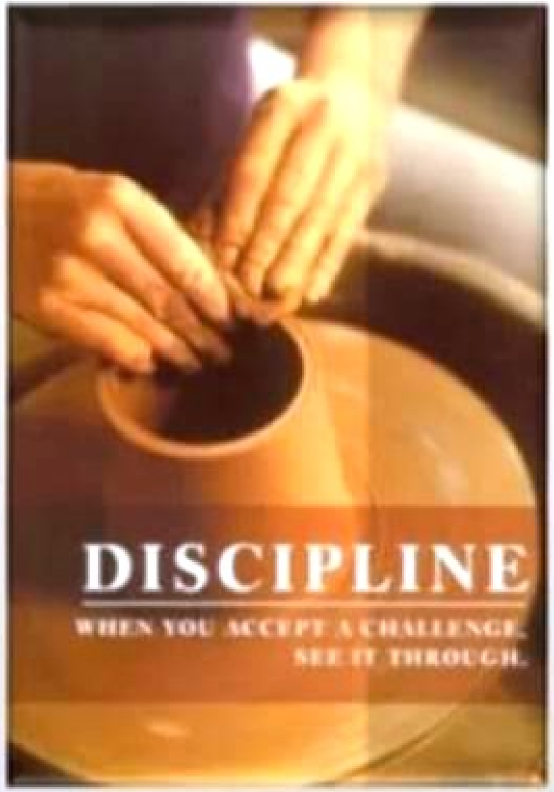

AnyScanner

Role of Teacher

Supreme Role

Spiritual guide

Role Model

AnyScanner

Twenty first century Education

AnyScanner

References

- Philosophical and Sociological Foundations of Education - N R Swarup saxena and N K Dutt
- A Text book of Educational Philosophy
  - Ram Nath Sharma
- Theory of Philosophy of Education (Vol 2)
  - S R Sharma
- An Introduction to Educational analysis
  - John Hospers
- Rudiments of Education – Philosophy and Sociology
  - Sankara Narayanan Paleery

AnyScanner

Pragmatism

Meaning of pragmatism derived from Greek word

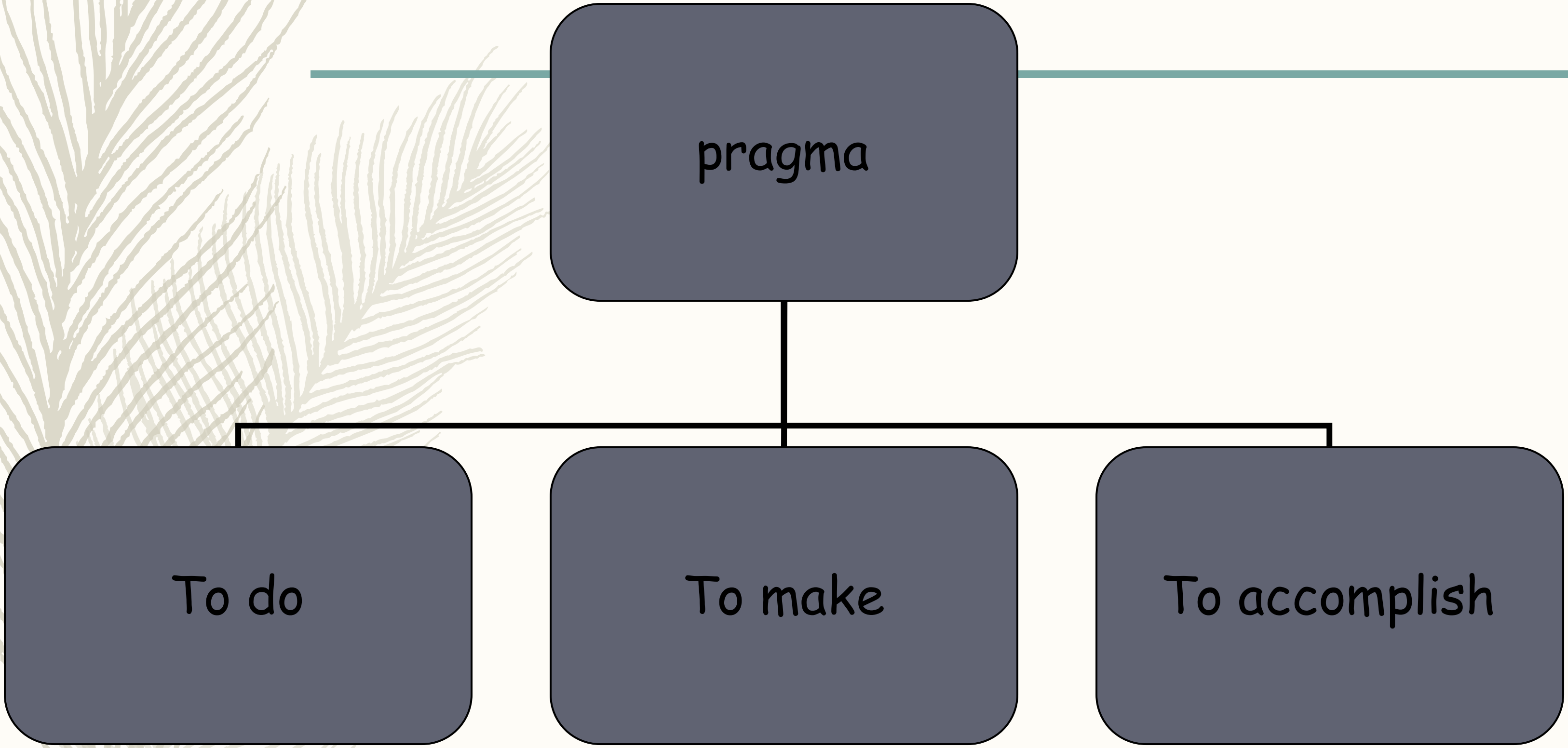

- Doing, making, accomplishing are used while referring to pragmatism.
- Expressions like ‘action’, ‘practice’, and ‘activity’ have become popular in education on account of pragmatism

Chief exponents

1. C.S. Pierce

- He preferred to use the term ‘pragmaticism’.
- He redefind truth and knowledge in terms of experience and their practical consequences.

2.William James

- He sees no difference between 'pragmatism' & 'practicalism'.
- He said that truth is that which works in institutions.

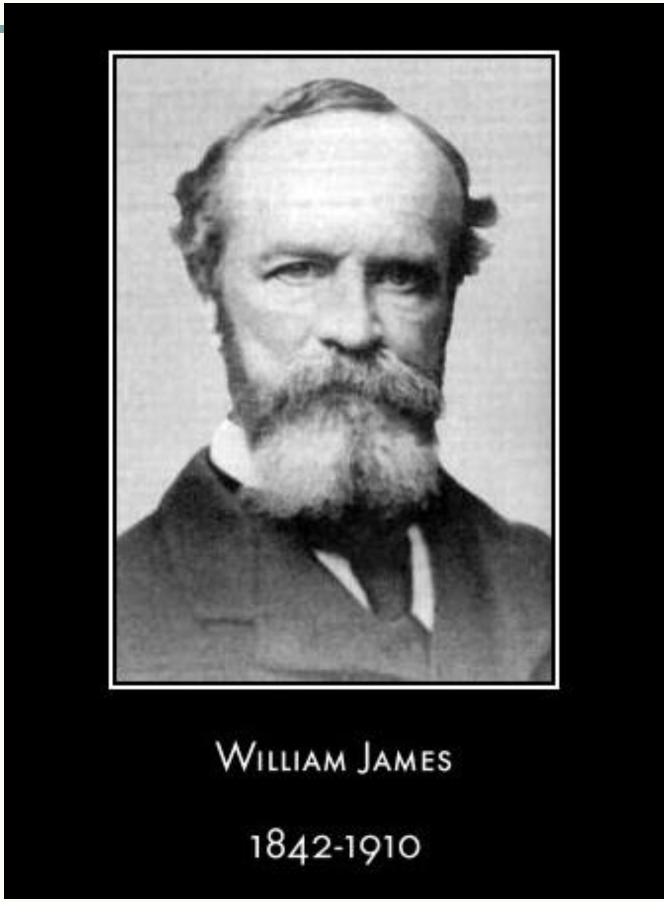

3.John Dewey

- He was its leading and most influential exponent.
- His purpose was to train pupils in cooperation and mutually useful living.

- Pragmatism is popularly regarded an American philosophy.

- Though it can be said to have originated in the ideas of Heraclitus of Greece in 535BC, who gave the Philosophy of Change,

- However Pragmatism as a school of philosophy is recent in origin.

- Main contributers of this philosophy were Charles Sanders Pierce, William James and John Dewey though they differ considerably in their methods and conclusions.

- Charles Sanders Pierce coined the term in his essay "How to make Ideas Clear" in 1878.
- Pierce's view of pragmatism is oriented towards physics and mathematics.
- He differed from others by being more realistic and rationalistic.
- According to him Pragmatism is the clarification of concepts and objects.
- William James however popularised the movement.
- His ideas were personal and psychological, and motivated by religious considerations.
- Dewey's outlook was scientific as his arguments are derived barely from an examination of scientific method.
- For all these original Pragmatists, the term 'Practical' meant the way the thought works in action.

- Pragmatists reject metaphysics as a legitimate area of philosophical inquiry.
- They believe that reality is in constant flux.
- Reality, they opine, is determined by an individual's sense experience.
- According to pragmatism, knowledge based on experience is true, genuine and worthy of acquisition. Since the phenomena are constantly changing, so knowledge and truth must change accordingly.
- The knowledge which is helpful in solving present-day problems is most preferred.
- They emphasize functional knowledge and understanding.
- Pragmatism does not believe in standard, permanent and eternal values.

Metaphysics

Believes in Theory of Evolution. Idealism is when you hold the view of Mind over Matter. It means that minds, or the ideas associated with minds, are the things that primarily exist. Realism is when you hold the view of Matter over Mind. It means reality exists independently of observer. Reality is just there, it is up to the mind to discover it.

Pragmatism is when you hold the view of Experimentism, where everything known, or even everything knowable, is either scientific or knowable from purely scientific activity.

Epistemology

Interaction with environment - experience

problem solving - scientific method.

Axiology

Good values are those for which we have good reasons. Categorization of reality are practice laden, they are also, inevitably, value laden. Pragmatism does not believe in standard, permanent and eternal values. According to this philosophy, values derive from the human condition.

Definitions

"pragmatism is temper of mind, an attitude; it is also a theory of the nature of ideas and truth; and finally, it is a theory about reality".

-William James

"Pragmatism offers us a theory of truth of knowledge, and a theory of reality".

-J.B. Prett

Forms of pragmatism

- Humanistic
- Experimental
- Biological

- **Humanistic pragmatism**

  "whatever fulfills our purpose, satisfies our desire, develop our life is true."

- **Experimental pragmatism**

  "whatever can be experimentally verified is true or works is true."

- **Biological pragmatism**

  "By this type of pragmatism best is found in the function of thoughts, in adapting the human organism to its environment."

Fundamental principles

- Experience is the central idea.
- No absolute values of life.
- Action is real & ideas are tools.
- Being an active being, he has the ability to solve his problems through logic & scientific methods.
- Knowledge is functional & tentative.
- Utilitarian aspect is supreme.

- It believes in present & future rather than past.
- Less emphasis on spiritual character.
- It reject all types of authority whether in government or religion or education.

Broad features

Of pragmatism in education

- Education should enable the child to learn new techniques to cope with new situation.
- Child learns by doing more than by reflection.
- Education is a continuous process. And its practices have to be experimental.

- Curriculum is activity centered & integrated.
- Life situation should be made the basis of education.
- Suitable environment is needed for the development of the personality of the child

- Through education moral values should be inculcated.
- Freedom should be given to the child for the development of his all round personality.

Pragmatism & aims of education

- Dewey lays emphasis on preparing a socially efficient individual.
- There no pre-conceived aims of education.
- Its aims are not final & fixed.

- Its aims arise out of situations.
- It should enable an individual to adapt to the environment.
- It should provide more and more purposeful experience.

Pragmatism and curriculum

Following are the criteria for curriculum construction:

1. ***Principle of Utility***

The school must provide those experience that are useful to the child.

3. ***Principle of Graded Curriculum***

2. ***Principle of child's Natural Instincts***

Curriculum should be based on the natural instincts of the child.

Curriculum should take into account the successive stages of the child development.

4. Principle of child 's occupations and Activities

Curriculum attaches limited importance to book learning.

Besides subjects, curriculum is purposive, productive, & socialized activities.

5. Principle of integration

Subjects are presented modes of activities.
Integration, for the pragmatist is of life, with activity of the learner.

6. Principle of social worth

A pragmatist also recognizes that the subjects and experience provided to the child must make him socially useful.

7. Principle of dynamism

Curriculum must not be rigid a/c to pragmatist.
It changes a/c to the need of the pupils and the society.

The main aim of knowledge i.e human progress should not be overlooked

Pragmatism and Methods of teaching

1. Learning by doing

It confront the child to the real situation as child' activities are spontaneous, purposeful and socialized.

2. Project method

Through this method he/she will strive, struggle, modify the situations and will finally realize his/her knowledge.

Pragmatism and Discipline

- Pragmatism holds that discipline should be social through and through.
- Free, purposeful and cooperative activities organized in the school lead to social discipline.
- These activities inculcate attitudes of cooperation and consideration.
- These activities enhances the moral development.
- Students also develop a sense of self-control.

Pragmatism and The teacher

- It regards the teacher as a helper and guide.
- The teacher assumes the role an ‘arranger of experience’.
- A/C to Dewey, “the teacher is a guide and director, he steers the boat, but the energy that propels it must come from those who are learning.”
- The teacher’s job is to keep the child alive to– his purpose, capacities, limitation

Merits

- It lays emphasis on establishing independent personality of the child
- It gives importance to the activity – centered education in the order that creative impulse of the child are activated and satisfied.
- Project method has been developed on this basis.
- It gives more importance to activity than to ideas or knowledge.
- It is based on democratic ideas.
- It lays emphasis on giving education to children in a social atmosphere.

Demerits

- It ignores the importance of educational aims, but in the absence of aim, the success of any work is doubtful.
- It ignores the intelligence and makes the man slave to instincts.
- Some truths are eternal and universal. It ignores the spiritualism totally.
- Emphasis only on material means comfort and tendency of enjoying life makes a man similar to animal.

Contribution of pragmatism to education

- It saves the child from the burden of education i.e. books
- It helps us realizing the value of today's life experiencing it.
- It advises us to have a balanced approach the past, present, and future. Doesn't laid too much emphasis on cultural heritage.
- It contributes to the development of a system which is vocation-centered.

- It recognizes that an individual be socially efficient and productive.
- It integrates the knowledge in the curriculum.
- The contribution in methods of teaching is commendable.
- The pragmatic approach is neither teacher-centered, nor examination-centered, nor curriculum-centered, but pupil-centered.

Thank uuuuuuu